International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 02(II), April - June, 2022, pp. 247-250

# नारी विमर्श पर भारतीय और पाश्चात्य विचारधारा

धनेश शर्मा*

## सार

*महिला विमर्श को पश्चिम और पूरब में भिन्न –भिन्न ढंग से परिभाषित किया है। पश्चिम की विद्वान इस्टेल फ्रडमेन ने मिन्न शब्दों में परिभाषित किया है –अर्थात पुरुष एवं ख्री सम महत्व रखते हैं। अधिकांश समाजों में पुरुष को वरीयता देते हैं। अतः स्त्री –पुरुष समानता के लिए सामाजिक आंदोलन जरूरी है। क्योंकि लिगाधारित अंतर अन्य सामाजिक परंपराओं में प्रवेश करता है। जो हो यह निश्चित है कि यह चितन अन्याय के विरुद्ध है।अर्थात पुरुष एवं ख्री सम महत्व रखते हैं। अधिकांश समाजों में पुरुष को वरीयता देते हैं।अतरू स्त्री –पुरुष समानता के लिए सामाजिक आंदोलन जरूरी है। क्योंकि लिगाधारित अंतर अन्यसामाजिक परंपराओं में प्रवेश करता है।जो हो यह निश्चित है कि यह चितन अन्याय के विरुद्ध है।महिला विमर्श को पश्चिम और पूरब में भिन्न –भिन्न ढंग से परिभाषित किया है। पश्चिम की विद्वान इस्टेल फ्रडमेन ने मिन्न शब्दों में परिभाषित किया है –अर्थात पुरुष एवं ख्री सम महत्व रखते हैं। अधिकांश समाजों में पुरुष को वरीयता देते हैं। अतरू स्त्री –पुरुष समानता के लिए सामाजिक आंदोलन जरूरी है। क्योंकि लिगाधारित अंतर अन्य सामाजिक परंपराओं में प्रवेश करता है। जो हो यह निश्चित है कि यह चितन अन्याय के विरुद्ध है।अर्थात पुरुष एवं ख्री सम महत्व रखते हैं। अधिकांश समाजों में पुरुष को वरीयता देते हैं।अतरू स्त्री –पुरुष समानता के लिए सामाजिक आंदोलन जरूरी है। क्योंकि लिगाधारित अंतर अन्यसामाजिक परंपराओं में प्रवेश करता है।जो हो यह निश्चित है कि यह चितन अन्याय के विरुद्ध है।कुछ लोग इसे पश्चिमी आविष्कार कहते हैं द्य मगर यह सही नहीं है। यह अत्यंत नाजुक औरगंभीर विषय है। इसे लेकर हमारे यहाँ पिछली आधी सदी से अलग वैचारिकता बनी है। कई बातें एकसाथ आ जाती हैं। एक तरफ चितन है जिसे वैचारिक दर्शन या सैद्धांतिक लेखन कहते हैं द्य दूसरी तरफनारी चेतना का सारा प्रसंग है। नारी संगठन या नारीवादी आंदोलन है। यह बिलकुल अलग स्तर परएक चीज है, जो बहुत पहले से चली आ रही है। तीसरे स्तर पर वह लेखन जहाँ रचनाकार क्या सोचताहै, क्या करता है, किस तरह भाषा से अपनी बात कह लेता है। रचनाकार अपने लेखन पर अपनी बातकह लेता है। रचनाकार अपने लेबल पर अपनी तरह से सोचता है और कहता है। ये धरातल स्त्री कोअलग–अलग तरह से केंद्रित करते हैं। उनके अपने अनुभव भी भिन्न होते हैं। पुरुष समाज में पुरुष के बनाये नियमों के, उसके वर्चस्व के, स्त्री की अपनी निरीहता केविवशता के, कि वह अपने को उस जकड़न से, उन रूढ़ियों से, विपरीताओं से निकलने की कोशिशनहीं करती। अर्थात खत्री स्वभाव को समझने स्त्री विमर्श का महत्वपूर्ण लक्ष्य है। यह न कोई विचारधारा है, न पश्चिम का संस्कार। आज के बदलते समय में बदलती दृष्टि से हमें सोचने की जरूरत है। यह समय कुछ परंपराओं से मुक्त होने का है। मुक्त होने का अर्थ अपनी संस्कृति भूलना नहीं। एक संतुलनात्मक लचीलापन आधुनिक सोच ही मुक्त होना है। जो स्त्री विमर्श में मिलता है। इसमें रिश्ते भी है – केवल पति–पत्नी ही नहीं। परिवार में माँ के रूप में है, बहु है, बहन दृबेटी है। समाज में स्त्री ऐसा व्यक्ति है जिसके तार हर वर्ग से जुड़े हैं। यह प्रेम का रस सब ओर दिखता है। जोड़ता है उसे भरता है। इसी में एक रूप प्रेमिका का भी है। यह प्यार और संबंधों की चर्चा है जो नारीविमर्श को सही दिशा देता है। इसमें एक रूप शोषण का भी आ जाता है। यह शोषण पति से हो सकता है, परिवार में होसकता है। उसी प्रकार प्रेमिक से भी संभव है द्य समाज से भी। बाहर जब नौकरी, प्रशासन, व्यवसायकरने समाज में आती है, कहीं भी वह शोषण का सामना करती है। इस शोषण की पीड़ा,*

* शोधकर्ता, हिन्दी विभाग, निर्वान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

*अस्मिता कासंघर्ष है जो नारी विमर्श का एक प्रमुख मुद्दा बनता है। उसकी इच्छा के विरुद्ध एक दृष्टि भी वह नहींसह पाती। यहाँ नारी का विद्रोही, संघर्ष रत रूप है जो नारी विमर्श में उभरा है। मतलब नारी विमर्श बहस का मुद्दा उतना नहीं जितना जागृति का है। यहाँ आधुनिकतासंतुलित है। नारी से जुड़ी कुंठा है, समस्या है, उसे खुलासा करें, मार्ग स्पष्ट करें। मुख्यतः यह सबनारी विमर्श के अंतर्गत हैं।*

***शब्दकोशः*** *लिंगाधारित, वरीयता, आंदोलन, वैचारिकता, सैद्धांतिक, नारीवाद, निरीहता, लचीलापन, अस्मिता।*

---

## प्रस्तावना

## पश्चिमी नारी विमर्श

वैसे नारी विमर्श यह शब्द पाश्चिम में Feminism का हिंदी पर्याय है। परंतु पश्चिम और पूर्व में नारी को लेकर भिन्न दृष्टि है। वहाँ नारी किसी परंपरा को नहीं तोड़, वर्तमान से ही विद्रोह कर रही है। भारत में हजारों वर्ष की रूढ़ियों, परंपरा और प्रचलन को तोड़ नया कुछ करने की बात करती हैमानो वह नारी अपनी अस्मिता का बोध लेकर अपनी मुक्ति की तरफ बढ़ रही है।आज उसमें यह बोध जाग उठा है कि वह स्वयं भी पुरुष के समकक्ष एक इकाई है। अतः किसी रूप में गुलाम या अधीनस्थ नहीं। पुरुष उस पर वर्चस्व न जमाये। अतः वह चाहती है किसभ्यता का अर्थ है मनुष्य पशु प्रवृत्ति पर विजय प्राप्त करे। सत्री–पुरुष के बीच कोई पाशविक संपर्क नहींरहना चाहिए। वह दोनों साथी बन कर रहें। यही मूल भावना है। इस प्रकार ख्त्री विमर्श एक प्रकार की चितन धारा है। जहाँ स्त्री के प्रति एक विशेष दृष्टि सेचितन वस्तु रूप में देखा। उसके गुण दोषों पर विचार ऐसे किया जैसे कोई बाह्य पदार्थ हो। इस कमोडी–फिकेशन में मनुष्य अस्मिता खत्म हो जाती है। उसे कमोडिटी, वस्तु, रत्नपदार्थ, अनमोल निधि कहा। इस शब्दावली में वह वस्तु कही गई है। विमर्श के बाद यह दृष्टि बदल जाती है। नारी एकजीवंत सत्ता स्वीकार होती है। इस प्रकार औरत अपने को व्यक्ति समझने लगती है। अंतर्मन में यहचेतना जाग्रत करना ही नारी विमर्श या सत्री विमर्श है। स्त्री विमर्श में औरत की चर्चा वस्तु रूप से हट करव्यक्ति रूप में की जाती है। समाज में उसकी स्वतंत्र सत्ता का युगों से हनन हुआ है। इसके कारणों की चर्चा है। इसके संबंध में आज की स्थिति की चर्चा है। समाज में स्त्री का स्थान क्या है ? स्त्री–पुरुषसंबंधों और उनके अतीत तथा वर्तमान पर विवेचन विश्लेषण है। भारतीय परंपरा की रूढ़ियों और कुछग्रंथियों पर प्रकाश डालना है। स्वस्थ एवं गतिशील समाज के लिए स्त्री की भूमिका और दृष्टिकोण परभी विचार होता है। कैसे उसकी रक्षा संभव है। इसमें उसके अधिकार और सामाजिक दायित्व दोनों परसंतुलित दृष्टि से चर्चा होनी है। तभी स्त्री विमर्श सार्थक सिद्ध होता है।

1949 में सीमोन द बेउवौर ने The Second Sex में नारी विमर्श पर पहली बार कटुतम शब्दों में लिखा। नारी को वस्तु रूप में प्रस्तुत करने पर टिप्पणी की। बाद में Modern women में डोरोथीपार्कर ने इस बात की आलोचना की कि नारी को नारी रूप में देखा जाय। वह कहती है नारी पुरुष सबमानव प्राणी रूप में स्वीकार हैं। यह द्वैत मान्यता पराधीनता और सापेक्षता को जन्म देती है। 1960 ई. में केटमिलेट ने रूढ़िवाद पर कहा – पुरुष स्त्रियों की समस्या पर सोचना ही नहीं चाहता स्त्रियों को अपनी खामोशी तोड़नी होगी। युगों से हो रहे अत्याचारों पर दुनिया को बताना होगा। सत्तर के दशक में बेट्टी फ्रिडन ने कहा – गहणी यानी घरेलू औरत समाज में पराजीबी है। वह अर्धमानव की कतार में है।इसी को विश्लेषण कर गिलीमन ने 1993 ई. में In A Different voice से कहा – बचपन मेंसशक्त दिखती लड़की औरत होने पर कमजोर क्यों दिखती है ? आत्मविश्वास ढह जाता है। वह बड़ी होकर पत्थर की मूरत बन जाती है। अब 20वीं सदी सूचना क्रांति लायी। संचार क्रांति में जनमानस को नियंत्रण में लाने का प्रयास है। व्यक्तिगत स्तर पर संवेदना शून्य किया जाए। मानव अस्तित्व के सामने यह एक संकट है।भौतिकतावाद और उपभोगतावाद की संस्कृति इहलौकितावादी सोच का यह परिमाण है। विश्व सोचरहा है कि सामूहिक प्रयास से संस्कृति का प्रवाह कैसे अक्षुण्ण रहे। आज नारीवाद में परिवार और विवाह पर प्रश्न चिन्ह लगाया है। उसे स्त्री दासता का चिन्ह कहा। नारीवाद में परिवार को जेल रचना कहा।हालांकि पहले पुरुष को दुश्मन कहा, आज ख्त्रीवाद की दृष्टि से उपभोक्ता संस्कृति पर फल फूलरही व्यवस्था है जो स्त्री–पुरुष दोनों को समान रूप से गुलाम बना रही है। भूमंडलीकरण के दौर में स्त्रीनये सवाल उठा रही है। इसे नवनारीवाद कहते हैं। हमने अपने भीतर की औरत को खोज निकाला है। हमारे पूर्वजों ने अपने औरतपन को नकारा।जो हासिल किया,

वह ठीक है। पर वे अपने प्रति उदासीनरही। तो उदास, अकेली चिड़चिड़ी हुई। जिन्दगी जी नहीं, भोगी नहीं द्य आज पुरुष बदल रहे हैं। औरत भी बदल रही है। नारीवाद से उत्तर आधुनिकतावाद कहता है – हमसे हमारी मस्ती मत छीनो, चूड़ियां –बालियां–सैंडिल अच्छे लगते हैं। सादगी की बात छोड़ो, बहुत दंबा लिया। वह कहती है अतीत और वर्तमानजहाँ मिलते हैं। वहीं हमारी संस्कृति के सारे उत्तर मिलते हैं।एनीले क्लाक कहती है – हमें भाषा की खोज करनी है। ऐसी भाषा जिसमें सत्रीत्व की रक्षा होसके। स्त्रियों को जो भाषा मिलती है वह पुलिग नियंत्रित है। आज वह नारी स्वतंत्रता के नाम पर उन्मुक्त जीवन यापन, स्वच्छ यौनाचार से विकसित एड्सजैसी बीमारी, मनोवैज्ञानिक विकृतियां, उत्तर दायित्व की स्वतंत्रता, उपभोगतावादी, भौतिकतावादी मानसिकतावाद अनिश्चय भविष्य की सूचना में घिरी है।

**पश्चिम में आधुनिक नारी विमर्श**

आज नारी विमर्श एक देश, जाति या धर्म का आंदोलन नहीं है। बीसवीं सदी में इसने अनेकरूप लिए और अनेक ढंग से चर्चा हुई। उनमें कुछ नामों की चर्चा की जा रही है।

**लिबरल फेमिनिज्म** – अमेरिका में जे एफ कनेडी ने 96 में कमीशन आन दस्टेटस आफ वीमन गठित किया। पर काम बहुत ढीला चला तो वहीं बेटी फायडन आदि ने सिविलराइट्स संगठन और नेशनल आर्गनाइजेशन फार विमनश गठित किया। संस्था का गठन 966 ई. मेंहुआ। इनमें कामकाजी महिलाएँ थी। ये लिबरल फेमिनिज्म की विश्वासी थी। इन्होंने जेएस मिल से प्रेरणा ली। जो कहते है भार ढोने में महिला उन्नीस है। परंतु बौद्धिक और नैतिक क्षमता एक है। ये राजनीतिक समानता हेतु लड़ें। वोट दें, चुनाव लड़ें। संपत्ति में समान अधिकार हो। ये भोली –भाली से अब समधिकार संपन्न होने लगी।

**रेडिकल फेमिनिज्म** – 1968 में टाइग्रेस एटकिंसन के नेतृत्व में लिबरल ग्रुपरैडिकल ग्रुप से अलग हुआ। छिटपुट सुधारों से क्या हो ? यह लड़ाई पुरुष से नहीं पितृसत्तात्मक समाज से है। योजनाबद्ध ढंग से एक–एक संस्था में (जैसे परिवार, चर्च, युनिवर्सिटी, विधान सभा) राजनैतिक और आर्थिक ढंग सेसंरचनात्मक परिवर्तन घटाये। साहित्यिक आलोचना में Images of Women इन्हीं रेडिकल फेमिनिज्म का चलाया है। विवाह तथा मातृत्व को मंथन कह कर जो छूटचाहें, मिलनी चाहिए। वे कहते हैं – गर्भधारण को बार्बरिक, अपने जन्मित शिशु के प्रति प्रेम को अंधाप्रेम कहा है। यहाँ तक कि इस धारा में पोर्नोग्राफी, वेश्यावृत्ति, बलात्कार, मारपीट, सती , पर्दा , डायनदहन आदि शोषणों का आधार नारी देह है। सेक्स स्टीरियोटाइप तोड़ने को महत्व दिया। खियों के लिए कौमार्य, आत्मतृप्ति या लेस्बियनिज्म को उचित मान कर इन सब की वकालात कीहै।

पितृसत्तात्मक समाज में यह धारणा है कि स्त्रियाँ क्रीतदासी या पण्य (Commodity) कीतरह उनकी पहुँच के भीतर रहने को लाचार है। स्त्रियों को पीठासीन देवी कह कर चरण छूते रहने से भीबात नहीं बनती – भारती इतिहास में इसके अनेक उदाहरण हैं। समझौते की बात पुरुषों की ओर से होनी चाहिए। वरना यह पृथकतावादी खाई बढ़ती जायेगी।

**मनोविश्लेषणात्मक स्त्रीवाद** – यह सारा चितन फ्रायड से जुड़ा है। वहाँ पर वेकहते हैं कि शिश्न–बोध होते ही पुरुषों में प्राकूगडिपीय अवस्था के अत्यधिक मातृमोह से सायास मुक्त होने की कठिन प्रक्रिया शुरू हो जाती है। इसमें वह सामाजिकता, अनुशासनप्रियता और निर्णयात्मकता से भर जाता है। स्त्रियों को इस प्रक्रिया से गुजरना नहीं पड़ता। इसलिए वे कम अनुशासित कम सामाजिक और कोमल तथा कमजोर रह जाती हैं।

**नेंसी शोदोरोब** (प्रसिद्ध महिला –मनोवैज्ञानिक) ने अनेक खियों की मातृमूलक संवेदनाओं का सूक्ष्म अध्ययन कर पूरी प्रक्रिया का विश्लेषण किया है। स्त्रियों को मां से अलग अपना प्रोजेक्ट करने की जरूरत नहीं होती (शारीरिक तादात्म्यबोध के कारण) अतरू इसका प्रभाव उनके व्यक्तित्व परअच्छा पड़ता है। जिससे उनका जुड़ाव होता है, उनसे यह जुड़ाव पूरा होता है। किसी तरह के भावनात्मक स्खलन की शिकार वे जल्दी नहीं होती। पर, समर्पित और विलीन होने की उनकी क्षमताकई बार उनकी स्वतंत्र अस्मिता के विकास में वाधक होती है। प्राकुएडीपीय संवेदनाओं का प्रभाव ऐसा होता है कि स्त्री –पुरुष में कुछ तात्विक स्वभावगत अंतर हो जाता है।

नस्ल (Race) एवं वर्ग (Class) भी संवेदनाओं को प्रभावित करने वाले तत्व हैं। इलिजावेदस्पेलमेन ने Gender in the contact of RaceAnd class में इस पर चर्चा की है। श्वेत – अश्वेत, संपन्न –विपन्न माताओं की

अंतश्चेतना बच्चों की अंतश्चेतना पर अलग–अलग ढंग से प्रभाव डालती है। अश्वेत/विभिन्न माताएँ अपने बच्चों को ज्यादातर जो कहानियां सुनाती हैं, वे दुखांत होती हैं – आनेवाले दिनों में जो परेशानी और पराभव अन्यायपूर्ण व्यवस्था के कारण उनके हिस्से आना है, उसके लिएउन्हें तैयार करने वाली कहानियां। लेकिन समृद्ध देशों की खुशहाल, निश्चित माताएँ अपने बच्चों कामनोबल मजबूत करने वाली सुखांत परी कथाएँ सुनाती हैं।

**युगों से साहित्य में महिलाओं का चित्रण**

साहित्य ने युगों से महिलाओं की भूमिकाओं को विकसित होते देखा है, लेकिन हाल के समय तक, अधिकांश प्रकाशित लेखक पुरुष थे और साहित्य में महिलाओं का चित्रण निस्संदेह पक्षपातपूर्ण था। इसके लिए बहुत कुछ इस तथ्य पर दोष देना पड़ता है कि प्राचीन दुनिया में, साक्षरता सख्ती से सीमित थी, और जो लोग लिख सकते थे उनमें से अधिकांश पुरुष थे। हालाँकि, मौखिक लोककथाओं में महिलाओं के योगदान को सामान्य रूप से लोक गीतों, कहानियों, कविता और साहित्य में नहीं लिया जा सकता है। यहां देखें कि युगों के माध्यम से महिलाओं को साहित्य में कैसे चित्रित किया गया। विक्टोरियन युग के दौरान, महिलाओं की भूमिकाओं पर एक अंतहीन बहस चल रही थी। जबकि उस युग में लेखकों का वर्चस्व था, जो महिलाओं को स्वर्गदूतों के रूप में मानते थे– निर्दोष, शारीरिक रूप से कमजोर और घरेलू वस्तुओं से कम नहींय एडवर्डियन कविता ने महिलाओं के अधिकारों पर अधिक ध्यान आकर्षित करने, नारीवाद और युद्ध के समय में महिलाओं के अपने घरों से बाहर निकलने की बात कही।

क्रिस्टीना रॉसेटी की श्गोब्लिन मार्केटश और लॉर्ड टेनीसन की श्लेडी ऑफ शालोट फ्रॉम द विक्टोरियन युग महिलाओं के इर्द–गिर्द केंद्रित है, जिसमें कुछ उच्च ज्ञान प्राप्त करने की खोज शामिल है, जो पुरुषों तक सीमित है और कैसे अपने प्रयास में, वे वापस पाने की अपनी क्षमता खो देते हैं। नारीत्व पर उन्हें गर्व था। एएम इरविन द्वारा प्रोबेशनर, विक्टोरियन युग के बाद महिलाओं की स्थिति का सबसे अच्छा उदाहरण है। आधुनिकता की शुरुआत का संकेत देते हुए, उपन्यास एक स्वतंत्र और प्रतिभाशाली महिला नायक की पेशेवर और व्यक्तिगत आने वाली उम्र को चित्रित करके आधुनिक महिलाओं के अधिकारों की विशेषताओं को भी प्रदर्शित करता है। लेखिका अनीता नायर के अनुसार, ''साहित्य हमेशा महिलाओं के प्रतिनिधित्व में अस्पष्ट रहा है। अच्छी महिलाओं के रूप में जिन्होंने सामाजिक मानदंडों को स्वीकार किया, उन्हें खुशी–खुशी पुरस्कृत किया गया। यहां तक कि सामंतवादी नायिकाएं अंततः एक अच्छे आदमी की बाहों में सामग्री और जीवन के उद्देश्य को ढूंढती हैं, चाहे वह एलिजाबेथ बेनेट (गौरव और पूर्वाग्रह) हो या जेन आइरे (जेन आइरे)। वैकल्पिक रूप से, उन्हें स्कारलेट ओ हारा (गॉन विद द विंड) के साथ एक अकल्पनीय साहस के साथ अपने भाग्य पर पछतावा करने के लिए छोड़ दिया जाता है या उन्हें अन्ना करेनिना या करुथम्मा (केममीन) या एम्मा बोवरी (मैडम बोवरी) की तरह अपनी जान लेनी पड़ती है।

लेखक जयश्री मिश्रा को लगता है कि अगर साहित्य समाज के लिए एक दर्पण के रूप में अपना काम कर रहा है, तो जाहिर है, किताबों में महिलाओं का चित्रण समाज के साथ–साथ बदल गया है, जेन ऑस्टेन की प्रतीत होने वाली नायिकाओं से लेकर हेलेन फील्डिंग की खुले तौर पर बिखरी हुई, माउथ ब्रिजेट जोन्स, एक आधुनिक– श्गौरव और पूर्वाग्रह' का दिन पुनः कार्य। भारतीय कविता में महिलाओं के चित्रण की बात करें तो यह स्वतंत्रता सेनानी, शिक्षाविद् और कार्यकर्ता महादेवी वर्मा थीं, जो महिला मुद्दों पर हिंदी कविता की पथ प्रदर्शक बनीं। उन्होंने महिलाओं की मुक्ति और महिला कामुकता के मुद्दों पर भी लिखा – एक ऐसा जो विवाह के बाहर बहुत अधिक अस्तित्व में था। महान कवयित्री ने अपने विषयों के लिए पारंपरिक हिंदू साहित्य से प्रेरणा ली, जिसमें छवियों को मुक्त करने की बात की गई थी।

**संदर्भ ग्रंथ सूची**

1. नारीवाद सिद्धांत और व्यवहार इल शुभ्रा परमार
2. नारीवादी निगाहें इल निवेदिता मैनन
3. अतीत के चलचित्र इल महादेवी वर्मा
4. स्मृति की रेखाएं इल महादेवी वर्मा

❖◆❖